भूमिका

प्रस्तुत शोध आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता के नजरिए से मीडिया के वर्तमान स्थिति पर एक आलोचनात्मक अध्ययन है। जहाँ इस बात पर लगातार बहस-मुबाहिसा जारी है कि भारत में अभी पूर्ण रूप से आधुनिकता नहीं आई है वहाँ उत्तर-आधुनिकता की चर्चा भी व्यर्थ है। बावजूद इसके तमाम अध्ययन और शोध-विषय की गहराई में जाने के लिए मैं उन पश्चिमी विचारकों को नजरअंदाज नहीं कर पाया जिन्होंने उत्तर-आधुनिकता के नजरिए से मीडिया के व्यवहार का अध्ययन किया है। चूँकि मीडिया शब्द के इस्तेमाल के साथ ही प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और इंटरनेट तमाम माध्यम एक साथ ही जेहन में कौंधने लगता है, लेकिन यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि पूरे अध्ययन में जहाँ भी मीडिया या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है उसका सीधा आशय टेलीविजन से है। टेलीविजन में भी खासकर समाचार चैनलों से है।

भूमंडलीकरण और भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : विमर्श एवं विश्लेषण (हिंदी समाचार चैनलों के विशेष संदर्भ में) जैसे विषय का चुनाव इसलिए क्योंकि मीडिया का छात्र हूँ और लगातार इस द्वंद्व में रहा हूँ कि, क्या वाकई मीडिया लोकतंत्र का चौथा खंभा है? खासकर तब जब भूमंडलीकरण के बाद मीडिया में हुए बदलाव जगजाहिर हैं। खासकर तब जब आजादी के समय का प्रेस और आज के मीडिया में जमीन आसमान का अंतर है। खासकर तब जब भारत सरकार का वाणिज्य मंत्रालय और खुद मीडिया के मालिक भी इसे एक उद्योग मानते हैं। साथ ही, एक तर्क यह भी है कि, उसके पास बाकी तीन अन्य स्तंभों – विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका – की तरह कोई कानूनी अधिकार नहीं है। पूरे अध्ययन में समाचार चैनलों को इसलिए रखा गया है क्योंकि वे अधिरचना के तमाम स्तरों से जुड़े होने की बात करता है और यह सच भी है। अध्ययन में इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव को देखने की कोशिश की गई है।

प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, साहित्य पुनरावलोकन, शोध-समस्या, शोध की प्रासंगिकता (उद्देश्य एवं महत्त्व), उपकल्पना और शोध-प्रविधि को रखा गया है।

द्वितीय अध्याय में भूमंडलीकरण के इतिहास, उसका विकास और उसके सामाजिक आयाम पर वृहद रूप से अध्ययन करने की कोशिश की गई है।

तृतीय अध्याय में टेलीविजन के इतिहास और उसके विकास पर संक्षिप्त अध्ययन है। निजी चैनल के आने से पहले दूरदर्शन की दशा-दिशा और फिर निजी समाचार चैनलों के विकास पर भी एक नजर डालने की कोशिश की गई है।

चतुर्थ अध्याय में मीडिया पर भूमंडलीकरण के प्रभाव को देखने की कोशिश की गई है। टी आर पी ने समाचार को कहाँ तक प्रभावित किया है और टी आर पी कहाँ तक उचित है, जैसे सवालों से

आगे बढ़ते हुए संस्कृति निर्माण में भूमंडलीकरण और मीडिया की भूमिका पर अध्ययन करने की कोशिश की गई है।

अंत में, साक्षात्कार के लिए जिन विषय-विशेषज्ञों का चुनाव किया गया वे हैं – प्रो. रामशरण जोशी, अभय कुमार दुबे, पुष्पेष पंत, जगदीश्वर चतुर्वेदी, पुण्य प्रसून वाजपेयी और रवीश। लेकिन इनमें से कुछ ही लोगों के साथ बातचीत हो पाई। बातचीत के फलस्वरूप जो तथ्य प्राप्त हुए वो उनके द्वारा पहले से किसी-न-किसी पुस्तक या पत्रिका में लिखे जा चुके हैं। इसलिए, उनके लिखित सामग्री को ही ज्यादा तवज्जो दी गई है।